बाइबिल में एक बहुत ही व्यापक विषय है, और वह है विश्वास। विश्वास ऐसे है जैसे ज्ञान, जैसा कि लोग कहते हैं कि ज्ञान की कोई सीमा नहीं है, उसी प्रकार विश्वास का ज्ञान भी अनंत है।

दो लोग एक ही समय में पढ़ाई पूरी कर सकते हैं, दोनों डिग्री प्राप्त कर सकते हैं और समाज में सम्मानित हो सकते हैं, लेकिन आप देखेंगे कि एक व्यक्ति दूसरे के मुकाबले कुछ मामलों में कमज़ोर हो सकता है। उदाहरण के लिए, अगर किसी ने प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के बाद पायलटिंग की पढ़ाई की और दूसरे ने डॉक्टर बनने की पढ़ाई की, तो क्या होगा अगर हम डॉक्टर को विमान उड़ाने दें या पायलट को सर्जरी करने दें? परिणाम भयावह होगा। इसी तरह, अगर हम किसी की विश्वास की शक्ति का सही मूल्यांकन नहीं करते, तो हम वास्तविकता को नहीं समझ पाएंगे।

विश्वास का मामला भी ऐसा ही है।

हर विश्वास व्यक्ति में चमत्कार नहीं करेगा।

हर विश्वास व्यक्ति को उद्धार नहीं दिलाएगा।

हर विश्वास ईश्वर को प्रसन्न नहीं करेगा।

और हर विश्वास केवल सुनने से उत्पन्न नहीं होता।

यदि आप इसे समझते हैं, तो आप अपने विश्वास का स्तर पहचान पाएंगे। आज, परमेश्वर की कृपा से, हम विश्वास के कुछ पहलुओं को देखेंगे और जानेंगे कि किस प्रकार का विश्वास परमेश्वर के लिए मूलभूत है।

लुका 7:1-10 की घटना को देखें:

एक कैदी था जिसका स्वामी बहुत प्रेम करता था। वह बीमार था और मरने के कगार पर था। जब स्वामी ने यीशु के बारे में सुना, उसने यहूदियों के बुजुर्गों को भेजा कि यीशु आए और उसके सेवक को ठीक करें। यीशु ने जाते समय, स्वामी ने कहा कि “प्रभु, मैं योग्य नहीं कि आप मेरे घर में आएं। बस एक शब्द कहो, और मेरा सेवक ठीक हो जाएगा।”

स्वामी ने यह विश्वास अपने जीवन अनुभव से रखा कि जब वह किसी को आदेश देता है, तो वह तुरंत पालन करता है। इसी तरह उसने यीशु से कहा कि बस एक शब्द कहो और सेवक ठीक हो जाएगा।

यीशु ने इस विश्वास को देखकर कहा:

“मैं इस्राएल में ऐसा बड़ा विश्वास नहीं देखा।”

यह महत्वपूर्ण है कि वह व्यक्ति यहूदी नहीं था, न ही उसने यहूदी धर्मग्रंथ पढ़े थे। वह रोम का नागरिक था। फिर भी, उसने जीवन के अनुभव से विश्वास पैदा किया।

महत्त्वपूर्ण शिक्षा:

किसी चीज़ को ईश्वर से प्राप्त करने का विश्वास केवल अनुभव से नहीं आता।

बाइबिल कहती है: “विश्वास सुनने से आता है, और सुनना मसीह के वचन से होता है।” (रोमियों 10:17)

सच्चा विश्वास केवल यीशु मसीह को जानने और समझने से आता है।

उदाहरण के लिए, टायर (वर्तमान लेबनान) की एक महिला ने यीशु से अपनी बेटी के लिए मदद मांगी। उसने यीशु को चुनौती दी, और यीशु ने कहा कि बच्चों का भोजन कुत्तों को नहीं देना चाहिए। महिला ने उत्तर दिया कि कुत्ते भी मेज से गिरने वाले टुकड़े खाते हैं। तब यीशु ने कहा: “तुम्हारा विश्वास बड़ा है, जैसा तुम चाहती हो, वैसा ही तुम्हारी बेटी के लिए होगा।” (मार्क 7:27)

यह दिखाता है कि अनुभव से नहीं, बल्कि ईश्वर के शब्द और विश्वास के आधार पर हम कुछ भी प्राप्त कर सकते हैं।

सारांश:

1. सच्चा विश्वास मसीह को जानने और समझने से बनता है।

2. केवल पूजा, उपवास या दूसरों की प्रार्थना से विश्वास नहीं बढ़ता।

3. विश्वास आपको शारीरिक और आध्यात्मिक जरूरतों के लिए सक्षम बनाता है।

4. यदि आपका विश्वास सही है, तो शैतान भी आपको परेशान नहीं कर सकता।

5. अपने विश्वास को मसीह के ज्ञान और जीवन अनुभव पर आधारित बनाए

निष्कर्ष:

विश्वास केवल इच्छाओं को पूरा करने का माध्यम नहीं है। माँ का विश्वास वह है जो मसीह के शब्द और उनके ज्ञान पर आधारित हो। जब हम ऐसा विश्वास विकसित करते हैं, तो हमें जीवन में शांति, सुरक्षा, सफलता और परमेश्वर से सीधे खुलासे प्राप्त होते हैं।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP....

Share on:
WhatsApp